रात का गीत (1 फरवरी)

प्रेरितों के काम 16:25 आधी रात के लगभग पौलुस और सीलास प्रार्थना करते हुए परमेश्वर के भजन गा रहे थे, और कैदी उनकी सुन रहे थे।

एक मसीही का जीवन उदास, दुःखी या चिड़चिड़ा नहीं है, बल्कि सबसे अधिक आनन्द भरा है। एक मसीही क्लेशों में भी आनन्दित रह सकता है, यह जानकर की क्लेश से धीरज और धीरज से खरा निकलना और खरे निकलने से आशा उत्पन्न होती है। (रोमियों 5:3,4) "और यह भी जानते हुए कि, क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है" -- पर्दे के उस पार। (2 कुरिन्थियों 4:17) इस तरह से हम दुःख के कटोरे में सहभागी होते हैं और आनन्द के कटोरे में भी, जो की हमारी मिरास का एक पक्का वादा है, उसमें भी सहभागी होंगे जो कि हमें मिलने वाली मिरास (विरासत) का पक्का वादा है। आत्मा में आनन्दित रहना प्रभु की सेवा में हमारी साहस और जोश को बनाए रखने के लिए बहुत जरुरी है। सन्त पौलुस जो सीलास के साथ कैद थे, उन्होंने इसी बात को कर्मों के द्वारा करके हमें एक उदहारण दिखाया है। इस बात पर ध्यान दें कि वे लोग उस समय परमेश्वर के वचन जेल में गा रहे थे जब पौलुस के पैरों को काठ से ठोक दिया गया था और उनकी पीठ को बेंत से चीर-फाड़ दिया गया था। जो भी मसीह के सच्चे चेले हैं, उनके साथ भी सकेत मार्ग में ऐसा ही होना चाहिए। (हमें भी सकेत मार्ग में क्लेश आएंगे जिनमे हमें आनन्दित रहना है।) Z'10-117 R4592:4 (Hymn 65) आमीन

रात का गीत (2 फरवरी)

भजन संहिता 149:5 भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित हों; और अपने बिछौनों पर भी पड़े पड़े जयजयकार करें।

यहाँ पर भजन संहिता में बोला जा रहा है कि संतों को बिछौने पर आराम करते हुए परमेश्वर के गीत गाने चाहिए। यहाँ पर बिछौने का मतलब है हमारा धार्मिक विश्वास। अभी के समय के संतों के पास सही आकार का बिछौना है और एक दोहर भी है जो की गर्म है और पर्याप्त है। इस भविष्यद्वाणी के द्वारा एक चित्र के रूप में अभी के संतों के पास जो चैन है, आराम है, विश्वास में विश्राम है, वह दिखाया जा रहा है, जबकि दूसरे लोग व्याकुल हैं और बेचैन हैं। जब हम इस अच्छे बिछौने पर आराम करते हैं, तो वो हमारी मानसिक स्थिति को और हमारे ह्रदय की अवस्था को दर्शाता है और जब हम परमेश्वर की जयजयकार करते हैं, तो 'दोधारी तलवार' को निपुणता के साथ उपयोग में लाते हैं। हमारे हाथों में जो दोधारी तलवार है, वो बाईबल है। Z'15-346 R5804:2 (Hymn 182) आमीन

रात का गीत (3 फरवरी)

भजन संहिता 119:54 जहां मैं परदेशी होकर रहता हूं, वहां तेरी विधियां, मेरे गीत गाने का विषय बनी हैं।

यह लिखा है कि 'वो मुझसे रात में गीत गवाता है' (अय्युब 35:10) और 'उसने मुझे नया गीत सिखाया' (भजन संहिता 40:3)। हमें यह जानकर कोई आश्चर्य नहीं होगा कि जब परमेश्वर के सन्तों को न्याय करने का अधिकार और महिमा मिलेगी तो 'भक्त लोग महिमा के कारण प्रफुल्लित होंगें' (भजन संहिता 149:5) और अपने मुँह से जयजयकार करेंगें, लेकिन कुछ लोगों को ये बात विचित्र लग सकती है कि अभी

की अपरिपूर्ण और कमजोरी की अवस्था में, जिसमें हम बोज से दबे हैं और कराह रहें हैं, ये भी ऐसी अवस्था हो सकती है जिसमें गीत गाना, जयजयकार करना, प्रफुल्लित रहना, धन्यवाद करना हमारे अन्दर प्रबल हो सकता है। फिर भी, यही दिव्य इच्छा है, जैसा की ये वचन (भजन संहिता 119:54) कहता है, जो भी सचमुच में जयवन्त है, उन सभी को अपने परदेशी होकर रहने की जगह में आनन्दित होकर रहना है। (मतलब पर्दे के इस पार भी सभी क्लेशों में हमें आनन्दित, प्रफुल्लित, हर्षित, खुश और प्रसन्न रहना है।) इसी आनन्द के विषय में हमारे प्रभु यीशु भी ये ऐलान करते हैं कि 'तुम्हारा आनन्द कोई तुमसे छीन न लेगा' (यहून्ना 16:22)। उसी प्रकार, जिन्होंने नया जीवन पाया है, उनके हिस्से में जो बोझ है उनके कारण कुछ मात्रा में शोक तो है, लेकिन उनके पास इस आनन्द की आशीष भी है जिसे न तो संसार दे सकता है और न ही छीन सकता है, और ये सब लगातार मिलने वाले आनन्द का स्त्रोत और कारण है और रात के गीत हैं, उस हज़ार साल के दिन के आने से पहले। हमें ये आनन्द हमारे परदेशी वाले सफ़र में मिल रहा है जब हम अपने वास्तविक घर (स्वर्ग) से दूर हैं। Z'97-305 R2231:6 (Hymn 179) आमीन

रात का गीत (4 फरवरी)

गिनती 10:29 और मूसा ने अपने ससुर रूएल मिद्यानी के पुत्र होबाब से कहा, हम लोग उस स्थान की यात्रा करते हैं जिसके विषय में यहोवा ने कहा है, कि मैं उसे तुम को दूंगा; सो तू भी हमारे संग चल, और हम तेरी भलाई करेंगे; क्योंकि यहोवा ने इस्त्राएल के विषय में भला ही कहा है।

जो भी हमारे साथ आता है, आशीष पाता है और दूसरों को हमारे साथ आने के लिए उकसाने के द्वारा हम भी आशीष पाते हैं क्योंकि हमारा खुद का विश्वास और हमारी

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को प्रोत्साहन मिलती है और बढ़ावा मिलता है। क्योंकि क्या ऐसा हो सकता है कि हम दूसरों से कहें कि परमेश्वर तुम्हारा भला करेगा और खुद भलाई का अनुभव न करें और परमेश्वर के हाथों से दिन-प्रतिदिन आशीषें न पाएं? और यदि मुश्किलें आएं भी तो, जो बात हमने कहीं है कि आशीषें आयेंगीं, इसके द्वारा हमारी मदद होगी ताकि हम विपरीत परिस्थितयों में भी न बड़बड़ायें और केवल भलाई ही को प्रगट करें। भलाई के अलावा और कुछ भी प्रगट न करें। जो भलाई हम सर्वदा परमेश्वर से पाते हैं। यदि हम ऐसा करते हैं, तो आत्मिक इस्राएली होने के नाते हम इस वचन की तरह मूसा के उदाहरण का पालन करते हैं जब हम दूसरों को जो की हमारे प्रभाव में हैं उन्हें आकर्षित करते हैं, उनकी भलाई करते हैं और उनके सामने परमेश्वर के वादे को प्रस्तुत करके उस वादे में अपने विश्वास को दिखाते हैं । Z'07-235 R4038:4 (Hymn 38) आमीन

रात का गीत (5 फरवरी)

इफिसियों 3:20 अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी बिनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है।

हम अपने मन को बांध कर और शांत मन से, हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह के प्रकाशन के द्वारा, हमारे लिए, लाए जाने वाले अनुग्रह के अंत की आशा करें। आइए हम उन चीज़ों को न देखें जो दिखाई देती है, जो कि सबसे ज्यादा अस्थायी है, लेकिन उन चीज़ों पर ध्यान करें जो अनदेखी हैं, अनन्त की वस्तुओं पर ध्यान करें। आइए हम प्रभु यीशु की ओर विश्वास की आँखों से देखें, हम जीवन के उस मुकुट को देखें जिसके बारे में उन्होंने हमसे वादा किया है, आइए हम उस स्थान की ओर देखें जो वह पिता के बड़े घर में हमारे लिए तैयार कर रहे हैं; आइए

हम संदेह और डर से नहीं, बल्कि पूरे विश्वास के साथ कहें कि हमारी बड़ी आशाओं का एहसास तब पूरा होगा जब प्रभु हमें और ऊपर बुलाएँगे और कहेंगे की अपने स्वामी के आनन्द में समभागी हो। "चाहे जो भी हो जाये, विश्वास ही से अटल भरोसा रखा जा सकता है"। जितना ज्यादा हम ऊपर की वस्तुओं पर अपने विश्वास को ले जाएंगे, उतना ही ज्यादा हम प्रभु को भाएंगे, जिन्होंने हमें अन्धकार में से अपनी अद्‌भुत ज्योति में बुलाया है; और जितना ज्यादा हम ऊपर की वस्तुओं पर विश्वास का अभ्यास करेंगे, उतना ही ज्यादा परमेश्वर की सामर्थ हममें होगी, और ये परमेश्वर की सामर्थ ही है, जिन्होनें अपनी सुइच्छा निमित्त हमारे मन में इच्छा और काम, दोनों बातों के करने का प्रभाव डाला है। और ये हमें ज्यादा से ज्यादा दुनिया से अलग रहने में हमको योग्य बनाएगी, दुनिया पर विजय पाने में योग्य बनाएगी, दुनिया, शैतान और अपने शरीर के साथ, पाप और स्वार्थ के खिलाफ एक अच्छी लड़ाई लड़ने में मदद करेगी। Z'06-359 R3892:4 (Hymn 126) आमीन

रात का गीत (6 फरवरी)

कुलुस्सियों 3:2 पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ।

क्योंकि शरीर की प्रवृत्ति लगातार नीचे की ओर रहती है, और नयी सृष्टि के विरोध में रहती है, इसलिए, जिन्होंने पहले से ही परमेश्वर को समर्पण कर दिया है, उन्हें स्वर्गीय वस्तुओं पर अपने प्रेम को लगातार स्थापित करने या फिर से स्थापित करने की आवश्यकता है। थोड़ी सी लापरवाही, थोड़ी सी वस्तुओं से दूर रहना, जिनको परमेश्वर ने उनके लिए आरक्षित रखी हैं, जो उनसे प्रेम करते हैं, हमारे मन को थोड़ी देर के लिए सांसारिक वस्तुओं पर लगाना और उससे प्रेम करना, सांसारिक आशाओं, सांसारिक महत्वाकांक्षाओं, सांसारिक संभावनाओं से प्रेम करना हमारे लिए बहुत

हानिकारक हो सकता है -- ऐसा करना हमारे पुराने स्वभाव को फिर से जगायेगा, उसको मजबूत करेगा और उसी अनुपात में हमारी नई सृष्टि को कमजोर करेगा, और इस तरह से हम इस स्वर्गीय मुकुट की दौड़ में बहुत पीछे हो जाएंगे, जो मसीह यीशु में हमारे ऊपरी बुलावे का इनाम है। `Z'07-4` R3914:1 (Hymn 183) आमीन

रात का गीत (7 फरवरी)

यूहन्ना 6:51 जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं।

जब हमारे प्रभु ने खुद को स्वर्ग से उतरी रोटी कहकर सम्बोधित किया, तो सुननेवाले लोग उनके द्वारा बोले गये इस चिन्ह को समझने में असफल रहे, और उन्होंने कहा, यह एक कठिन बात है। क्या यह मनुष्य हमें अपना मांस खाने के लिए देगा? वे यह देखने में असफल रहे कि हमारे प्रभु ने सत्य को, परमेश्वर की बड़ी योजना को, जो प्रभु यीशु पर केन्द्रित थी, वह जीवन जो वे दुनिया की ओर से देने के लिए आए थे उसका प्रचार कर रहे थे, ताकि हम उनके माध्यम से जी सकें। यीशु के मांस को सचमुच में खाने से केवल मांस ही उत्पन्न होगा, लेकिन आत्मिक तौर पर यीशु के मांस को खाने का मतलब होगा कि, उनके द्वारा प्रदान किए गए परमेश्वर की आशीष और करुणा का सहभागी होना , और उनकी भावना और स्वभाव को समझना। जब हम अपने प्रभु के गुणों में सहभागी बनते हैं तो वे गुण हमारे हो जाते हैं, जैसा कि जब हम अपने मनों में उनके वचनों को उतारते हैं तो हम विश्वास में मजबूत होते हैं और आत्मा और अनुग्रहों के सभी गुणों में बढ़ते हैं। आइये हम हमारे हिस्से के प्रतिदिन के मन्ना को इकठ्ठा करें और प्रतिदिन उसे उपयोग करें, और यह महसूस करें कि यह हमारा हिस्सा तब तक होगा जब तक हम स्वर्गीय कनान नहीं पहुंचते। निश्चित रूप से तब प्रभु के वफादार लोगों के द्वारा अनुभव की गई दिव्य कृपा की सभी पूर्ति, प्रभु पर हमारे भरोसे और विश्वास को बढ़ाएगी जिन्होनें हमें

अंधेरे अन्धकार से अपने अद्भुत ज्योति में बुलाया है।`Z'07-186` R4012:5(Hymn 71) आमीन

रात का गीत (8 फरवरी)

भजन संहिता 32:11 हे धर्मियों यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो, और हे सब सीधे मन वालों आनन्द से जयजयकार करो!

हमें विश्वास है कि हमारे सभी पढ़ने वाले इस आशीषित सन्देशे के प्रति ज्यादा से ज्यादा आभार प्रकट करेंगे - प्रभु में आनंदित होने के लिए - जो की, इस दुनिया की छोटी वस्तुओं में खुश होने से बहुत अलग है। वे जिनका प्रेम इस धरती पर की वस्तुओं पर टिका है, वे उन क्लेशों के द्वारा लगातार पाएंगे की उनके आनन्द में बाधा पड़ रही है। लेकिन जिन्होनें अपना प्रेम ऊपर की वस्तुओं, प्रभु और महिमामय वस्तुओं पर लगाया है, जिसका वादा प्रभु ने उनसे किया है, वे लोग वास्तव में आनन्दित हो सकते हैं, क्योंकि हमारे प्रभु कभी बदलते नहीं। "परमेश्वर के अच्छे वादों में एक भी पूरा हुए बिना नहीं रहेगा।" सभी जो आशा, इरादे और कोशिश में सच्चे हैं, वे प्रभु की स्तुति और जय जयकार करके खुश होकर करते हैं, न केवल इसलिए क्योंकि उनके द्वारा अनजाने में की गयी गलती और उनकी कमजोरियों को ढक दिया गया है, बल्कि इस विचार से भी की धार्मिकता का राज्य यानि परमेश्वर का हज़ार साल का राज्य अब केवल एक हाथ की दूरी पर है, और इस राज्य की प्रभुता के अंतर्गत हमारे बड़े शत्रु, शैतान को बाँधने के बाद, धरती के सभी परिवारों को आशीष मिलेगी। `Z'08-331` R4273:4 (Hymn 248) आमीन

रात का गीत (9 फरवरी)

व्यवस्थाविवरण 8:18 परन्तु तू अपने परमेश्वर यहोवा को स्मरण रखना।

जितना ज्यादा हम उन आत्मिक आशीषों को पाते हैं, जिसका प्रभु ने हमसे वादा किया है, और जिसे हमने विश्वास से स्वीकार किया है, हमें नम्रता की उतनी ही ज्यादा आवश्यकता होगी; और हमारी विनम्रता उसी अनुपात में बढ़ेगी जितना हम दिव्य अच्छाई की प्रशंसा और परमेश्वर का प्रभु यीशु के द्वारा धन्यवाद करेंगे। परमेश्वर के प्रति आभार और धन्यवाद से भरा हृदय अनुग्रह से अनुग्रह में, मजबूती से दृढ़ता में, ज्ञान से ज्ञान की ओर बढ़ेगा; लेकिन अगर हमारा परमेश्वर के प्रति आभार करने का नजरिया घटता जाए, और हमको जो भी लाभ हो रहा है उसको हम खुद की प्राप्ति माने या हमारी अच्छी क़िस्मत माने, तो उसी अनुपात में हम पाएंगे, की आत्मिक मामलों में हम ठण्डे पड़ रहे हैं, और बिना धन्यवाद किए, हममें अपवित्रता आएगी, आत्मिक रूप से सन्तुष्टता और घमण्ड आएगा, और ये सब मिलकर हमको आत्मिक रूप से कम कर देगा, और अगर हम इसमें बढ़ते जाएँ, तो हम आत्मिक रूप से मर जाएंगे। `Z'02-286` R3080:2 (Hymn 179) आमीन

रात का गीत (10 फरवरी)

दानिय्येल 12:12 क्या ही धन्य है वह, जो धीरज धर कर तेरह सौ पैंतीस दिन के अन्त तक भी पहुंचे।

हमें क्या आशीषें मिली हैं? जिस प्रकार पवित्रशास्त्र ने हमसे कहा है, वैसा ही हुआ है। जो लोग प्रभु से अपने हृदय को खोलते हैं, वे पाते हैं कि प्रभु न ही केवल उनके पास आते हैं, बल्कि उनके पास आकर उनके साथ भोजन भी करते हैं, और प्रभु उनके सेवक बन जाते हैं, उन्हें सुकून देते हैं, और उन्हें "उचित समय पर जरुरी

आत्मिक भोजन भी देते हैं" और उनकी सेवा भी करते हैं। यह वचन इन सभी आशीषों का लेखा देता है, जिनपर हम वर्तमान सच्चाई की रोशनी में आने के समय से उत्सव मना रहे हैं, और यह साबित करता है कि, परमेश्वर की युगों की यह दिव्य योजना किसी मनुष्य की नहीं है, न ही यह कोई मनुष्य की योजना या कल्पना है; क्योंकि कोई भी मनुष्य परमेश्वर के वचनों से इतनी महिमामय वस्तुओं को निकालने के काबिल नहीं है। `Z'14-330` R5568:5 (Hymn 230) आमीन

रात का गीत (11 फरवरी)

यूहन्ना 1:14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।

क्योंकि पूरी मानवजाति आदम की सन्तान थी और उसके मृत्यदण्ड का हिस्सेदार थी, उनमें से कोई अपने भाई के लिए किसी भाँति से छुड़ौती नहीं दे सकता था। (भजन संहिता 49:7) परमेश्वर ने सारे मामले को ही चुप करा दिया था क्योंकि पूरी मानवजाति का उद्धार केवल एक परिपूर्ण मनुष्य स्वेच्छा से उसके बदले मरकर ही कर सकता था। क्योंकि ऐसा कोई मनुष्य था ही नहीं, इसलिए परमेश्वर ने 'वचन' को देहधारी बनाकर, अपने एकलौते को मनुष्य बनाकर आदम और उनके सभी बच्चों का उद्धारकर्ता बनाकर भेजा । Z'13-347 R5352:4 (Hymn 62) आमीन

रात का गीत (12 फरवरी)

1 कुरिन्थियों 3:9 ...हम परमेश्वर के सहकर्मी हैं।

सुसमाचार के युग का एक कार्य अब्राहम के आत्मिक वंश का चयन करना है, जिसके द्वारा पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष मिलेगी --और वे लोग धरती के वंश से

होंगे। यह वादा कि, दुनिया के सब परिवारों को आशीष मिलेगी तब तक पूरा नहीं होगा जब तक आत्मिक इस्राएलियों का चयन पूरा नहीं होता। "यदि तुम मसीह के हो, तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारिस भी हो" (गलातियों 3:29) वचन॥ पहले से आखिरी तक केवल एक काम चल रहा है। और इसलिए हम पढ़ते हैं; "एक बोने वाला है और दूसरा काटने वाला। मैंने तुम्हें वह खेत काटने के लिये भेजा, जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया: औरों ने परिश्रम किया और तुम उनके परिश्रम के फल में भागी हुए" (यूहन्ना 4:35-38) वचन॥ चाहे वह कटनी का कार्य करने के लिए शुरु में आया था, या अब इस सुसमाचार युग के अन्त के समय में - जो की कटनी का समय है - यह सब एक ही कार्य है, और इस कटनी के कार्य का एक ही उद्देश्य है, परमेश्वर के चुने हुओं को इकट्ठा करना। Z'13-261 R5302:1 (Hymn 275) आमीन

रात का गीत (13 फरवरी)

1 थिस्सलुनीकियों 5:24 तुम्हारा बुलाने वाला सच्चा है, और वह ऐसा ही करेगा॥

हम ये आशा रखते हैं, प्यारे दोस्तों, कि हम मेमने (मेमना--जो की इशारे वाली भाषा में हमारे प्रभु यीशु मसीह हैं) के विवाह के लिए तैयार हो रहे हैं, मेमने के साथ हमारे विवाह के लिये। आज हम जो कुछ कर पाते हैं या करने में असफल होते हैं, उसका प्रभाव हमारी आखिरी तैयारी पर होगा। इस मामले में हर चीज का आधार हमारा मन है। प्रभु जानते हैं कि हमारे पास ये अपरिपूर्ण शरीर है। इसलिए हमारी परिक्षा इससे नहीं होगी कि, क्या हमारा शरीर परिपूर्ण हैं, बल्कि हमारा हृदय परिपूर्ण हैं या नहीं। यदि हमारा हृदय परमेश्वर के प्रति परिपूर्ण है, तो हम अपनी क्षमता के अनुसार अपने शब्दों, अपने क्रियाओं और अपने विचारों को प्रेम के कानून के साथ तालमेल

में लाएँगे। अगर हम यह देखते हैं कि हम अपने ह्रदयों को परमेश्वर के प्रति वफादार रखते हैं, तो हम ज्यादा से ज्यादा, परमेश्वर के प्यारे पुत्र, हमारे स्वर्गीय दूल्हे, प्रभु यीशु की नकल बनेंगे। और हम अपने " स्वर्ग पर के भवन में, जो हाथों से बना हुआ घर नहीं परन्तु चिरस्थाई है" के साथ आनंद के साथ, परमेश्वर के उपयुक्त समय में प्रवेश करेंगे। तब हमारे प्रभु हमें परमपिता के सामने प्रस्तुत करेंगे - "दुल्हन जो अपने दूल्हे के लिए सजी है"; प्रभु हमें बिना किसी दोष के परमपिता के सामने पूरे आनन्द के साथ प्रस्तुत करेंगे। Z'16-165 R5907:4 (Hymn 230) आमीन

रात का गीत (14 फरवरी)

2 कुरिन्थियों 4:17 क्योंकि हमारा पल भर का हल्का सा क्लेश हमारे लिये बहुत ही महत्वपूर्ण और अनन्त महिमा उत्पन्न करता जाता है।

क्या हम घृणा, तिरस्कार, अपमान को सहने के लिए तैयार हैं, जो कि सच्चाई के प्रति वफादारी के कारण आती है? क्या हमारे पिता का प्यार भरा अनुग्रह पूरी दुनिया के पक्ष और मुस्कुराहट की तुलना में कहीं अधिक है - क्या यह जीवन से भी बढ़कर है? यदि ऐसा है, तो हम परमेश्वर के नाम के साथ आगे जा सकते हैं, आनन्दित होते हुए, हमारे होंठों के साथ उसकी प्रशंसा करते हुए, नया गीत "हमारे परमेश्वर की करुणा का गीत" गाते हुए, जिसे परमेश्वर ने हमारे मुंह में डाल दिया है। इस गीत को गाने की कुछ कीमत चुकानी पड़ती है। `Z'14-119` R5441:6 (Hymn 17) आमीन

रात का गीत (15 फरवरी)

भजन संहिता 149:4 क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न रहता है; वह नम्र लोगों का उद्धार करके उन्हें शोभायमान करेगा।

ये लोग (यहोवा की प्रजा) वही है जिन्हें परमेश्वर अपने पुत्र के ज्ञान और उसकी सभी आशीषों के बारे में सिखाकर और उनका मार्गदर्शन करके प्रसन्न होते हैं। यदि वे नम्रता में कायम रहे, तो परमेश्वर के वारिस और अपने प्रभु यीशु मसीह के साँझा वारिस बनने के योग्य रहेंगे। हम वचनों में भी पढ़ते हैं कि नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगें। वे ये अधिकार मुख्य और असली वाचा के कारण पायेंगें। ये सब अब्राहम के वंश कहलाएंगें। इन्हीं के द्वारा, जो भी हज़ार साल के राज्य में आज्ञाकारी होंगे, वे सभी मानवजाति के लोग भी आशीष पायेंगें। हजार साल के अन्त में जो आखरी परिक्षा होगी, उसके बाद पूरी दुनिया सिखाने के योग्य बन जाएगी। सब लोग ये महान पाठ सिख जाएंगें कि परमेश्वर सभी ज्ञान का फव्वारा है और परमेश्वर की शिक्षाएँ उनके लाभ के लिए हैं। Z'13-381 R5370:5 (Hymn 10) आमीन

रात का गीत (16 फरवरी)

यशायाह 28:12 ...विश्राम इसी से मिलेगा; इसी के द्वारा थके हुए को विश्राम दो...।

हमलोग परमेश्वर के वादों पर विश्राम कर रहें हैं--परमेश्वर की शक्ति और उनकी अपने वादों के द्वारा भला करने की क्षमता पर विश्राम कर रहें हैं; क्योंकि हम जानते हैं कि जिसने हमें बुलाया है, वो अपने सभी अच्छे वचनों को पूरा करने में सामर्थी है। ये शान्ति या विश्राम पवित्र आत्मा की विशेष आशीष है। हम जिस मात्रा में इस पवित्र आत्मा को पाते हैं, परमेश्वर के पवित्र मन को पाते हैं, उनके पवित्र

स्वभाव को पाते हैं, केवल उसी अनुपात में ये शान्ति हममें पूर्ण होती है। ये एक सरल अनुपात का मामला है। हम जैसे--जैसे परमेश्वर के अनुग्रह और ज्ञान में बढ़ेंगे, हमें ये विश्राम मिलेगा और हम मजबूत बनेंगे और दिन पर दिन हमारे अन्दर परमेश्वर की शान्ति बढ़ती जायेगी और हम परमेश्वर के प्रेम में बने रहेंगे। Z'14-103 R5432:3 (Hymn 112) आमीन

रात का गीत (17 फरवरी)

यूहन्ना 16:22 …तुम्हारे मन में आनन्द होगा; और तुम्हारा आनन्द कोई तुम से छीन न लेगा।

हमारा आनन्द क्या है जो कोई भी मनुष्य हमसे नहीं ले सकता, और ताड़ना और दुःख और तकलीफ केवल उस आनन्द को गहरा और चौड़ा और ज्यादा मीठा बना सकती है? यह कैसा आनन्द है? यह आनन्द आने वाली आशीषों को पहले से चख लेना जैसा है, जो हमारी विरासत का एक हिस्सा है। यह परमेश्वर पर विश्वास के द्वारा प्रेरित है, कि वे इस कार्य को जिसे उन्होंने शुरू किया है, दोनों योग्य और इच्छुक हैं पूरा करने में और जिसे हम चाहते हैं कि, इसे परमेश्वर अपने सबसे अच्छे तरीके से पूरा करें; पूरा विश्वास रखते हुए कि जब तक हम अपने विश्वास के हाथों से उनके अनुग्रह से भरें वादों को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं, तब तक परमेश्वर हमें उनसे अलग होने की अनुमति नहीं देंगे। हमें मसीह में परमेश्वर के प्रेम से कौन अलग कर सकता है? क्या क्लेश और ताड़ना ऐसा कर सकती है? हमारा विश्वास है कि कोई भी हमें पिता के हाथ से नहीं छीन सकता (यूहन्ना 10:29) वचन, और यह कि "पिता आप ही हमसे प्रेम करते हैं", और जब तक हम उनके प्रेम में आज्ञाकारी होकर बने रहते हैं, तब तक वे हमको उनसे दूर नहीं करेंगे। जी हाँ, हमें विश्वास है कि हमारे लिए सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती है, अर्थात उनके लिए जो

परमेश्वर से प्रेम रखते हैं; हमें पूरा विश्वास है की, जो हमारी ओर हैं (यानी परमेश्वर), उन सब से जो हमारे विरोध में हैं, उनसे बड़े हैं, इस तरह का परमेश्वर पर विश्वास हममें जरूर से आनन्द लाता है, जो दुनिया की समझ से परे है, और परमेश्वर की शांति जो सब समझ से परे है, हमारे हृदयों को मसीह यीशु में सुरिक्षत रखती है। Z'97-305 R2232:1 (Hymn 226) आमीन

रात का गीत (18 फरवरी)

इफिसियों 5:1 इसलिये प्रिय बालकों के समान परमेश्वर का अनुकरण करो।

यह महत्पूर्ण समय है कि, हम सीख जाएँ कि हम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते हैं, और हमें इनके बीच चयन करना है। यदि हम प्रभु और उनकी सेवा को नहीं चुनते हैं और इन्हें हमारे मन के स्नेह में पहला स्थान नहीं देते हैं, तो यह माना जायेगा की हम स्वाभाविक मनुष्य के हितों से सम्बंधित दूसरी वस्तुओं को पहले स्थान पर रख रहे हैं और प्रभु से सराहना और इनाम जो वे हमें देंगें होगा वह इसी के अनुसार होगा। परमेश्वर के पास वास्तव में पृथ्वी के सभी परिवारों के लिए आशीष है, लेकिन महिमा, आदर, और अमरता के बहुत ही बड़े और बहुमूल्य वादों में प्रस्तुत की गई विशेष आशीष उन लोगों के लिए है जो उनसे बेहद प्रेम करते हैं, जितना वे घर या जमीन, व्यवसाय या धन, परिवार या कुटुम्बी या स्वयं से प्यार करते हैं, उससे भी अधिक वे परमेश्वर से प्रेम रखते हैं। जिन्होंने प्रभु का अनुसरण करने के लिए सब कुछ त्याग दिया है, उनके

लिये हमारी सलाह यह है की हम पीछे मुड़कर न देखें, क्योंकि हमने कल्पना से भी परे सबसे भव्य सौदा किया है, और यह की हम सबसे भव्य इनाम प्राप्त करने के मार्ग में हैं, हम हमारे प्रभु के अद्‌भुत कार्य में उनके साथ मिलकर उनके सहयोगी हैं और हमारे पास परमेश्वर की मंजूरी है। Z'06-47` R3721:4 (Hymn 312A)आमीन

रात का गीत (19 फरवरी)

इब्रानियों 4:16 इसलिये आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे॥

हालाँकि प्रार्थना एक विशेषाधिकार है और न की एक आदेश, फिर भी हमारी स्थिति प्रार्थना को हमारे लिए एक आवश्यकता बना देती है। आदम और हव्वा के परमेश्वर के प्रति आज्ञा न मानने के कारण उन्हें अदन की वाटिका से निकाल दिया गया और इस तरह वे शरीर की परिपूर्णता, जिसमें परमेश्वर ने उनकी सृष्टि की थी, उनके आज्ञा न मानने के द्‌वारा उस परिपूर्णता से पाप में गिर गए और इस तरह पूरी मानवजाति भी पाप में गिर गयी और इस तरह हमारे इस शरीर में अपरिपूर्णताएं और कमजोरियां हैं, जो हम आदम से लेकर आये हैं; फिर भी हम जो नई सृष्टि हैं, इस शरीर की कमजोरियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है। इन जिम्मेदारियों को पूरा करने का एकमात्र तरीका यह है कि, हम परमेश्वर के अनुग्रह के सिंहासन के पास प्रभु यीशु के द्‌वारा जाएँ और आवश्यकता के समय जरुरी सहायता को प्राप्त करें। इसलिए, जो कोई भी, प्रार्थना में अनुग्रह के सिंहासन के पास अक्सर जाता है, वह इस प्रकार से यह दर्शाता है कि, वह उस अवसर का उपयोग करने की आवश्यकता

को पहचानता है, जिसे परमेश्वर ने उसके हित में और उसके विशेषाधिकार के रूप में प्रदान किया है। Z'13-84 R5201:5 (Hymn 162) आमीन

रात का गीत (20 फरवरी)

लूका 9:26 जो कोई मुझ से और मेरी बातों से लजाएगा; मनुष्य का पुत्र भी जब अपनी, और अपने पिता की, और पवित्र स्वर्ग दूतों की, महिमा सहित आएगा, तो उस से लजाएगा।

परमेश्वर का वचन मात्र बाइबल ही नहीं है, बल्कि इसमें सभाओं में दिए गए संदेशे, प्रचारक के लिए बनाई गयी छोटी पुस्तकें, अन्य पुस्तकें आदि भी उसी अनुपात में शामिल हैं जिस अनुपात में ये पुस्तकें सचमुच में परमेश्वर के प्रिय पुत्र के संदेशे को प्रगट करती हैं। यह बात हमें एक और मामले पर बारीकी से और अधिक नजदीक लाती है, और इसका मतलब यह है की, बाइबल में प्रस्तुत किये गए किसी भी उपदेश से हमें लज्जित नहीं होना है, और न ही किसी साहित्यिक सामग्री से लज्जित होना है, जिसे प्रभु के प्रावधान के अंतर्गत तैयार किया गया है, और जो साहित्यिक रचनाएँ परमेश्वर के सत्य का प्रतिनिधितत्व करें और सत्य का खुलासा करें और सत्य की सही व्याख्या करके हमें समझाये। प्रभु अपने लिये ऐसे लोगों को चुनना पसंद करेंगे, जिनके विचार स्वतंत्र हो, जो खुले मन वाले लोग हों, जिनके ह्रदय प्रभु और उनकी सच्चाई जिसका प्रभु प्रतिनिधितत्व करते हैं, के प्रति इतनी वफ़ादारी से भरा हो, की वे अपना सबकुछ, यहाँ तक की जीवन भी अति आनंदित होकर समर्पित कर दें, न की वैसे लोगों को चुनेंगें जो सत्य की उन्नति में किसी भी मात्रा में बाधा डालें, या किसी भी मात्रा में सत्य पर निरादर या अपमान लेकर आएं। इसके विपरीत, जो लोग प्रभु और उनके वचन से लज्जित नहीं होते हैं, और जिन्हें पता चलता है कि उनमें लज्जित होने के लिए कुछ भी नहीं है, लेकिन इसके विपरीत, सब कुछ

आनन्दित होने के लिए है, ऊंचा उठाने के लिए है, वे शाही पताका को ऊँचा उठाने की खोज में रहेंगें, इस बड़े आनंद के सुसमाचार को अपनी क्षमता के अनुसार दूसरों को बताने के लिए उत्सुक रहेंगें, और उन सभी लोगों के साथ सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगें, जो इस प्रकार से परमेश्वर के गुणों को प्रगट करते हैं, जिन्होनें हमें अंधकार से अद्‌भुत रौशनी में बुलाया है। Z'06-152 R3777:4 (Hymn 118) आमीन

रात का गीत (21 फरवरी)

भजन संहिता 34:13 अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने मुंह की चौकसी कर कि उससे छल की बात न निकले।

प्रभु के लोगों को उनके शरीर के सभी अंगों की तुलना में अपनी जीभ को वश में करना सबसे कठिन है, और इसलिए हम अच्छी तरह से प्रार्थना कर सकते हैं, "हे यहोवा, मेरे मुख पर पहरा बैठा"! अगर हमारी प्रार्थना सच्ची हो, और हृदय से की जाए, तो इसका मतलब यह होगा कि प्रार्थना करने वाला दिव्य सहायता को प्राप्त करने के लिए उसकी सामर्थ में जो भी है उसे कर रहा है। और दिव्य सहायता इस सबक को सीखाने में हमारी सहायता करती है, और हमें यह आश्वासन देती है कि, इसमें हमारा दोष नहीं हैं, पर यह हमारा हृदय है जिसे पवित्र आत्मा के द्वारा सुधार की जरुरत है, "क्योंकि जो मन में भरा है, वही मुंह पर आता है"। यहां सबक यह है कि हमें सुधार हमारे हृदय में करने की जरुरत है जिसके द्वारा हमारा होंठों को सुधारने में जो भी कठिनाई होती है, वह भी सुधर जाएगा। हमें अपने मन को सर्वशक्तिमान परमेश्वर के मन के साथ और अधिक सामंजस्य में लाने की आवश्यकता है। हमें अपने मन को दिव्य चरित्र के अनुग्रहकारी गुणों के साथ और अधिक लय में लाने की आवश्यकता है। परमेश्वर का दिव्य चरित्र न केवल दूसरों के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार में प्रगट होता है, बल्कि इसके अलावा, सबों के प्रति

करुणा, प्रेम, दया और परोपकार भी उनके दिव्य चरित्र का आधारभूत हिस्सा है, जिसके साथ हमारे मन का मेल होना है। Z'06-79 R3739:6 (Hymn 145) आमीन

रात का गीत (22 फरवरी)

रोमियो 2:7 जो सुकर्म में स्थिर रहकर महिमा, और आदर, और अमरता की खोज में है, उन्हें वह अनन्त जीवन देगा।

हम किसकी खोज में हैं? ये एक अच्छा सवाल है जो हममें से प्रत्येक को स्वंय पर लागू करना चाहिए और उचित समय में हमें उन सभी को भी ये सवाल खुद से पुछने का सुझाव देना चाहिए जिनमे वर्तमान की सच्चाई को जानने की रूचि है। हम जानते हैं कि दुनिया किसकी खोज में हैं--धन, आदर, सुनाम, सुख आदि -- और हम जानते हैं बहुत से लोग जो प्रभु की और मुड़ जाते हैं उनके अन्दर अभी भी दुनिया की आत्मा वास करती है। वे प्रभु यीशु के चेले बनना चाहते हैं और साथ ही साथ जो आशाएं और लक्ष्य उनके पास होते हैं और जिन्हें वो बढ़ाना चाहते हैं और जिनमें वो सुख पाते हैं वो अधिक या कम दुनिया की ही होती है। इसलिए, ये आवश्यक है कि हम उन बातों पर ध्यान दें जिन्हें हमारे स्वामी प्रभु यीशु ने चेलों से कहा था और ये माने कि जैसे वे बातें उन्होंने व्यक्तिगत तौर पर हममें से प्रत्येक को खुद कही हो। तुम किसकी खोज में हो? आइये हम इस सवाल का उत्तर अपने स्वामी को अपने ह्रदय और प्रार्थना में दे और उत्तर देने से पहले आइये हम ये विचार अच्छी तरह से कर लें कि ये उत्तर एकदम सच्चा हो, क्योंकि सचमुच में हम खुद को भी धोखा दे सकते हैं, लेकिन उन्हें केवल जिनसे हमारा नाता है, उनके साथ धोखा नहीं कर सकते। सही यह है कि हमें राज्य की खोज करनी चाहिए और यह मालूम होना चाहिए कि दिव्य प्रबन्धों के अन्तर्गत इसके साथ बड़े आदर और महिमा और पदवी जुड़े हैं और यह जानना चाहिए कि इसलिए हमें "महिमा, आदर और अमरता" की

खोज करनी है। लेकिन राज्य की इस खोज के साथ मेल रखते हुए हम अवश्य अपने स्वामी के इन वचनों को भी जो उन्होंने किसी और अवसर पर कहे थे याद रखना चाहिए, कि हमें पहले (मुख्य रूप से) परमेश्वर के राज्य और उनके धर्म की खोज करनी है। Z'08-13 R4116:2 (Hymn 78) आमीन

रात का गीत (23 फरवरी)

कुलुस्सियों 3:12 इसलिये परमेश्वर के चुने हुओं की तरह जो पवित्र और प्रिय हैं, बड़ी करूणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो।

जिन लोगों को परमेश्वर किसी भी महत्वपूर्ण या खास कार्यों में उपयोग में लायेंगे; उन सभी परमेश्वर के लोगों में नम्रता का गुण रहना सब गुणों में सबसे अनिवार्य है। पवित्रशास्त्र में सब कुछ विनम्रता के चरित्र की और ही संकेत करता है। यदि प्रभु यीशु के चेले हमेशा इस बात को अपनी याद में रखें और लगातार अपने मार्ग को इसी के अनुसार रचते रहें, तब उन्हें परमेश्वर कितना अधिक उपयोग में लाएंगे, इसके लिए हम निश्चित हो सकते हैं। परमेश्वर की सेवा का कोई भी कार्य करना एक आदर की बात है, लेकिन हमें जितनी ज्यादा सेवा की अनुमति मिल जाए, अभी के जीवन में हमें उतनी ही ज्यादा आशीषें मिलेगी और आने वाले जीवन में हमें बहुत ही बड़े और महान इनाम मिलेंगे। इसलिए, आओ जैसा कि प्रेरित पतरस ने 1 पतरस 5:6 वचन में कहा है, हम भी परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहें; जिससे वह हमें उचित समय पर बढ़ाएं। Z'13-189 R5262:5 (Hymn 267) आमीन

रात का गीत (24 फरवरी)

मत्ती 6:11 हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे।

क्या इस प्रार्थना में प्रभु यीशु केवल शारीरिक भोजन की चर्चा कर रहे हैं? यदि ये प्रार्थना किसी साधारण मनुष्यों के समूह के लिए होती तो हम ऐसा सोच भी सकते थे कि यहाँ पर प्रभु यीशु शारीरिक भोजनवस्तु की प्रार्थना के लिए बता रहें हैं। लेकिन हम जानते हैं कि ये प्रार्थना किन्हें सिखाई जा रही थी? प्रभु यीशु इस प्रार्थना को उन लोगों को सीखा रहे थे जिन्होंने सकेत मार्ग पर चलने के लिए वाचा बाँधी है और जो मसीह में नई सृष्टि माने जाते हैं। ये प्रार्थना केवल नई सृष्टि के द्वारा की जाने के लिए सिखाई गयी है। इसलिए, ये बात जरूर से समझनी है कि इस याचना को नई सृष्टि कर रही है और इसका मतलब यह हुआ कि यहाँ पर पूरी तरह से नई सृष्टि के पालन-पोषण की बात मुख्य है -- फिर चाहे नई सृष्टि के लिए हमारे स्वर्गीय पिता वही सांसारिक जरूरतों का प्रबन्ध करें जो उनकी नज़रों में सर्वोत्तम हो। Z'06-205 R3806:5 (Hymn 286) आमीन

रात का गीत (25 फरवरी)

जकर्याह 4:6 …न तो बल से, और न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा होगा, मुझ सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

हमारे प्रभु यीशु ने खुद ही आत्मिक मन्दिर की नींव डाली है और वो खुद ही सिरे का पत्थर बनकर इसे पूरा करेंगे, और परमेश्वर के उचित समय में न केवल मनुष्य, बल्कि स्वर्गदूत भी इस शानदार मन्दिर की भव्यता की जय-जयकार करेंगे। यह कार्य (मन्दिर को पूरा करने का काम) उनके (प्रभु यीशु) के हाथ में है और भले ही बाहरी रूप से देखने से अभी के समय में निराशा जैसा लग सकता है, और बहुत कम

प्रगति हुई है ऐसा भी लग सकता है, लेकिन फिर भी उनके दासों का साहस दृढ होना चाहिए और उन्हें ये याद रखना चाहिए कि जय मिलने वाली है, और ये जय मनुष्य की सामर्थ या प्रसिद्धि या प्रभाव या उनकी खुद की शक्ति से नहीं मिलेगी, बल्कि परमेश्वर की आत्मा के द्वारा ये जय मिलेगी। (परमेश्वर की आत्मा इस आत्मिक मन्दिर के निर्माण को अपने निश्चित समय में पूरी करेगी) प्रभु यीशु पर विश्वास और उसकी आत्मा जब हमारे पास होगी तभी उसी के द्वारा हमें दुनिया, शरीर और शैतान पर जय मिलेगी और जिसने हमें प्रेम किया और अपने बहुमूल्य लहू से खरीद लिया है, उसी के द्वारा हम जयवन्त से भी बढ़कर बनेंगे। Z'99-223 R2522:2 (Hymn 91) आमीन

रात का गीत (26 फरवरी)

मत्ती 7:7 मांगो, तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढ़ो, तो तुम पाओगे; खटखटाओ, तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा।

परमेश्वर अपनी आशीषें देने से पहले ये क्यों चाहते हैं कि हम उनसे माँगे? ये तो निश्चित है कि उनका उद्देश्य सही है! वे हमें हमारी जरुरत महसूस कराएँगे, वे हमें मिले हुए विशेष अधिकार की कदर महसूस कराएँगे, वे हमें जवाब देखना सिखाएँगे और इन सभी अनुभवों के द्वारा वे हमें नई सृष्टि में अपने पुत्र की तरह बढ़ाएंगे। इसलिए हमें मांगना है, ढूंढना है, खटखटाना है यदि हम परमेश्वर के अनुग्रह के धन को पाना चाहते हैं, और ये चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे लिए ज्यादा से ज्यादा अदभुत अधिकार के दरवाजे और दया के दरवाजे और आशीषों के दरवाजे खोल दें जो कि वे हमें ही देना चाहते हैं, जैसे-जैसे हम चरित्र में बढ़ते हैं और उनकी दया के लिए तैयार होते जाते हैं। Z'06-206 R3807:4 (Hymn 85) आमीन

रात का गीत (27 फरवरी)

इफिसियों 6:16 और उन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिससे तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।

जब हमारा बाहरी मनुष्य सड़ रहा होता है या नष्ट हो रहा होता है तब भी नयी सृष्टि उन्नति करती रहती है। शैतान ने भी फरीसियों और प्रधान याजकों के द्वारा हमारे प्रभु यीशु को मौत देने में सफलता पाई थी, लेकिन यही मौत हमारे प्रभु के लिए महिमा में जाने का मार्ग बन गयी। परमेश्वर ने प्रभु यीशु के साथ जो व्यवहार किया वो एक उदाहरण है हमारे लिए कि परमेश्वर हमसे कैसा बर्ताव करेंगे। इसलिए, हम ये जान जाएँ कि यदि शैतान हम पर जय पाता हुआ लगे तो भी, ये "हल्के क्लेश", जैसा कि 2 कुरिन्थियों 4:17 वचन में बताया गया है, हमारे लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है और अनन्त महिमा उत्पन्न करते जाते हैं। हम जानते हैं कि हमारे पास कोई भी ऐसी शक्ति नहीं है जिससे की हम शैतान का विरोध कर पाएं। इन सब चीज़ों के लिए परमेश्वर को छोड़कर कोई भी योग्य नहीं। क्योंकि वही शैतान और उसके सभी गिरे हुए स्वर्गदूतों से बड़े हैं। हम विश्वास की आँखों से उन वस्तुओं को देखते हैं जो शारीरिक आँखों में दिखाई नहीं देती है। इसलिए हमारा अडिग रहना, स्थिर रहना, विश्वास से भरा रहना हमारे को लाभ पहुँचाता है और इस प्रकार हम हर उस कष्ट का सामना कर सकते हैं जो हमारे पिता की अनुमति से हमपर आता है या जिसे हमपर आने की अनुमति हमारे पिता देते हैं। Z'13-56 R5184:6 (Hymn 136) आमीन

रात का गीत (28 फरवरी)

मत्ती 5:13,14 तुम पृथ्वी के नमक हो... तुम जगत की ज्योति हो।

हम ये उम्मीद करते हैं कि सभी जय पाये हुए मसीह के देह के सदस्यों के बदलने, महिमा में जाने और मसीह की देह के पर्दे के उस पार में पूरा होने के बहुत पहले से ही पर्दे के इस पार मसीह के देह के एक भी सदस्य नहीं रहेंगे। जगत से रोशनी जा चुकी होगी और अन्धकार अपनी पूरी शक्ति से ऐसा शासन करेगा जैसा पहले कभी न हुआ होगा, नमक जा चुका होगा और दुष्टता फुर्ती से अपनी पकड़ बनाएगी और इन सब का परिणाम महान संकट का समय होगा जैसा की जगत से आरम्भ से अब तक नहीं हुआ। इस बीच में, हमें अपनी रोशनी को चमकने देना है और इसके द्वारा पिता की महिमा करनी है, भले ही मनुष्य ध्यान दे या अपने आप को ध्यान देने से रोकता रहे। हमें अपने 'नमक' होने या बचाव करने वाले प्रभाव को, धार्मिकता और सच्चाई के हमारे प्रभाव को अभ्यास में लाते रहना है, फिर चाहे लोग सुनें या अपने आप को सुनने से रोकते रहें; भले ही हम स्पष्ट रूप से ये जानते हैं कि अभी की विनम्र दशा में परमेश्वर का उद्देश्य दुनिया को अपनी कलीसिया के द्वारा ज्ञान देना नहीं है। ये पूरा मामला हमें जाँचेगा और हम महिमा वाली मसीह की देह का सदस्य बनने के योग्य हैं या नहीं, इसे साबित करेगा। मसीह जब पूरी महिमा में अपनी पूरी देह के साथ आएंगे तब सूर्य की तरह पिता की महिमा में इसकी रोशनी का प्रकाश फैलेगा, चमकेगा और पूरी दुनिया को ज्ञान की रोशनी से इस तरह से भर देगा कि हमारे पास अभी के समय में जो छोटे दिये की रोशनी है, उससे उस रोशनी की किसी भी तरह से तुलना ही नहीं की जा सकती है। Z'06-75 R3737:1 (Hymn 320) आमीन

रात का गीत (29 फरवरी)

2 तीमुथियुस 3:4 विश्वासघाती, ढीठ, घमण्डी, और परमेश्वर के नहीं वरन सुखविलास ही के चाहने वाले होंगे।

प्रभु के लोग प्रार्थना सभाओं में भाग लेकर, प्रार्थना सभाओं का आयोजन करके और विभिन्न तरीकों से, अवसर के अनुसार, स्वेच्छा से अपनी सेवा समर्पित करके अपने आप को खर्च करते हैं और उनकी सेवा में खर्च होते जाते हैं। वे दुनिया से अलग रह रहे हैं - एक अलग जीवन जी रहे हैं, समर्पण का जीवन। दुनिया में अभी आठ घंटे का दिन है। प्रभु के वफादार लोग, इसके विपरीत, अपना दिन सोलह घंटे का बनाते हैं। लेकिन ये सभी वर्तमान दिन की परिस्थितियाँ जोखिमों से भरी हैं। हमारे लिए ऐसा करना जो दूसरे करते हैं, और प्रभु की सेवा के लिए केवल उतने समय के लिये समर्पित होना जिसे दुनिया एक उचित दिन का काम मानती है, यह हमारे बलिदान की वाचा की पूर्ति बिलकुल नहीं करेगा। जो लोग केवल सही करने की कोशिश करते हैं, और दुनिया के तौर - तरीकों के अनुसार, वफ़ादारी से आठ घंटे या एक दिन का समय डालते हैं, उन्हें इसी दृष्टिकोण से जाँचा जाएगा; और वे केवल बड़ी भीड़ में एक स्थान प्राप्त करेंगे। वे बलिदान की वाचा की शर्तों को पूरा नहीं कर रहे हैं। लेकिन छोटी झुण्ड प्रभु की इतनी खुशी के साथ सेवा करेगी कि वे मुश्किल से जान पाएंगे कि उनके प्रयासों को कैसे रोका जाए। वे यह पहचानते हैं की उनकी देह पूरी तरह से प्रभु को समर्पित है, और वे प्रतिदिन एक उचित और तर्कसंगत तरीके से मरते जाते हैं। इन जोखिमों के समयों के मद्देनजर, हम में से हरेक को अपने आप से यह सवाल पूछना है की, मैं किस वर्ग का हूँ? `Z'14-71` R5413 (Hymn 127) आमीन